International Journal of Hindi Research
www.hindijournal.com
ISSN: 2455-2232
Received: 02-12-2025, Accepted: 01-01-2026, Published: 15-01-2026
Volume 12, Issue 1, 2026, Page No. 12-14

मणिपुरी साहित्य में पुनर्जागरण (Renaissance)

चान्दम ओकेनजित सिंह
शोधार्थी, हिंदी विभाग, मणिपुर विश्वविद्यालय, कांचीपुर, मणिपुर, भारत

सारांश
यह आलेख मणिपुरी साहित्य में 20वीं शताब्दी के आरम्भ में आए पुनर्जागरण पर केंद्रित है। 1891 में अंग्रेज़ी शासन के बाद मणिपुर के सामाजिक, राजनीतिक और शैक्षिक जीवन में बड़े परिवर्तन हुए। पश्चिमी शिक्षा के आगमन से लोगों में नई चेतना और जागरूकता आई, जिससे जन आंदोलन और सामाजिक परिवर्तन संभव हुए।
नई शिक्षा नीति ने मणिपुरी भाषा और साहित्य के विकास को गति दी। प्रारम्भ में शिक्षा का माध्यम बंगाली था, पर बाद में मणिपुरी भाषा में पाठ्य–पुस्तकें और साहित्य रचना शुरू हुई। अनेक लेखकों और पत्रिकाओं ने आधुनिक मणिपुरी साहित्य की नींव रखी।
इस प्रकार यह काल मणिपुरी साहित्य का पुनर्जागरण युग माना जाता है, जिसमें नई सोच, मातृभाषा प्रेम और आधुनिक साहित्यिक रूपों का विकास हुआ।

मूल शब्दः अंग्रेज़ी शासन, सामाजिक परिवर्तन, राजनीतिक परिवर्तन, शैक्षिक परिवर्तन, पश्चिमी शिक्षा

प्रस्तावना
पुनर्जागरण का शाब्दिक अर्थ होता हैं, फिर से जागना, फिर जन्म लेना आदि। प्रयोग के समय इस शब्द का अर्थ क्षेत्र बहुत ही बड़ा हैं मूल रूप से १४ वीं और १७ वीं सदी के बीच यूरोप में जो सांस्कृतिक व धार्मिक प्रगति आन्दोलन तथा युद्ध हुए, उन्हें ही पुनर्जागरण कहा जाता हैं इस नई जागरण के फलस्वरूप जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में नवीन चेतना आई, नई खोज होने लगी तथा ज्ञान की प्राप्ति हेतु नए– नए तरीके निकाले गए। परलोगवाद और धर्मवाद के स्थान पर मानववाद को प्रतिष्ठित किया गया।
प्राचीनकाल में कुस्तुनतुनिया ज्ञान– विज्ञान का केंद्र था। वहां पर ग्रीक और रोमानी मेनुस्क्रिप बड़ी मात्र में उपलब्ध होती थी। तुर्कों के आक्रमण से कई ऐसे विद्वान भागकर इटली आ गए जिनके पास बहुत सारी ग्रीक और रोमन मेनुस्क्रिप थी। उसी समय इटली में सामंत– साही कमजोड पड़ चुके थे और कुछ फ्रीडम भी मिल रहे थे। इटली में उस समय नई– नई चीजों व विचारों को जगह मिलती थी। विद्वानों द्वारा लाई गई उन मेनुस्क्रिपों के अध्ययन– अध्यापन से इटली में पुर्नार्जगारण (Renaissance) का उदय हुआ। बाद में धीरे– धीरे पुरे यूरोप में फ़ैल गए थे। (Webster's New International Dictionary के अनुसार) Any period similarly characterised by enthusiastic and vigorous activity along literary, artistic or other lines strictly, such a period when distinguished by a revival of interest in the past or a return to old masters for inspiration (as the Irish renaissaisance.
विश्व के विभिन्न देशों तथा प्रदेशों के विभिन्न साहित्यिक इतिहास में पुनर्जागरण (Renaissance) का उदभव और विकास हमें देखने को मिलते हैं। भारत में अंग्रेजी शासनकाल में अंग्रेजों द्वारा पश्चिमी शिक्षा के आदान – प्रदान से भारतियों में नई चेतना, नई सोच तथा नए विचारों का जन्म हुआ। अतः समाज, धर्म और कला – विद्या के क्षेत्र में एक नया परिवर्तन आया। इसप्रकार १६ वीं शताब्दी में नई चेतनाओं के साथ रजा राममोहन रॉय आदि महान व्यक्ति के नेतृत्व में भारत में (Renaissance) पुनर्जागरण का उदय हुआ।

राजनितिक एवं सामाजिक परिस्थिति
सन १८६१ अप्रैल २७ में अंग्रेज द्वारा मणिपुर को अपने कब्जे में लेने के बाद मणिपुर में पुनर्जागरण(रेनैस्सैंस) का आगमन हुआ। मूल रूप से अंग्रेजों के विजय के बाद चुराचांद को रजा बनाकर शासन करने की कालावधि (१८६१–१६४७) को मणिपुर में पुनर्जागरण (रेनैस्संस) का समय मना जाता हैं। इस समय प्रशासन, राजनीती और सामाजिक स्थिति में बहुत बड़ा परिवर्तन देखने को मिलता हैं। उस समय अंग्रेजों द्वारा मणिपुर में शासन करने की विधि को Native rule कहा जाता हैं। उनके प्रति भक्ति भाव या वफादार सदा कायम रखने वाले को राजा बनाकर सीमित शक्ति देकर अपने अधीन रखना, इसका मूल लक्ष्य था।
अंग्रेजी शासन काल आरम्भ होते ही विभिन्न परिवर्तन लाये गए। सर्वप्रथम लालूप प्रथा को स्थगित किया गया। इसके बदले में 'निवास कर' के रूप में प्रति घर २ रुपये 'कर' लेना शुरू कर दिया। लालूप एक जबरन काम करवाने की विधि हैं; जिसमे १६ वर्ष से ६० वर्ष तक के सभी पुरुषों को ४० दिन के भीतर १० दिन तो सरकार के लिए काम करने पड़ते थे। इस तरह कई तीखे नियमों का लागू करना प्रारम्भ कर दिया गया। साधारण मणिपुरी प्रजा हारे हुए की तरह अपने ही मातृभूमि में सिर झुका कर जीते थे।
प्रश्न यह उठता हैं कि कितने समय तक क्रोध, हताश और निराश हुए लोगों को दबाकर रखना संभव होगा? अत्याचार से पीड़ित मणिपुरी जनता नए विचारों तथा उत्साओं को लेकर अंग्रेज सरकार के ख़िलाफ़ कई आन्दोलन शुरू करने लगे थे। उनमे से कुछ महत्वपूर्ण हैं – प्रथम नारी आन्दोलन (अहान्बा नुपी लान) (१६०४), जादोनांग और रानी गैदिनलिऊ की आन्दोलन (१६३०–१६४६), द्वितीय नारी आन्दोलन (अनिशुबा नुपिलान) (१६३६), नेता इराबोत के राजनैतिक आन्दोलन (१६३८–१६८५) आदि। शक्ति प्रदर्शन के साथ– साथ समय की धारा में आए नए– नए परिवर्तनों का ज्ञान मणिपुरी जनता तक पहुँचाने का प्रयास; मणिपुरियों के प्रति अंग्रेज सरकार की एक बहुमूल्य देन हैं।

नई शिक्षा नीति का प्रभाव
२० वीं शताब्दी की शुरुआत में पश्चिमी शिक्षा के आने पर मणिपुर में पुनर्जागरण (रेनैस्सांस) की शुरुआत में बहुत बड़ा योगदान मिला। मणिपुर के सर्वप्रथम पोलिटिकल एजेंट कप्तान गोर्डन ने अंग्रेजी शिक्षा के प्रचार– प्रसार हेतु एक स्कूल खोलने का प्रयास किया परन्तु सफलता नहीं मिली। बाद में सर जोहनसतोन के अथक प्रयास से सन १८८५ में 'जोहनसतोन इंग्लिश स्कूल' की स्थापना हुई और अध्ययन – अध्यापन का कार्य शुरू हो गया। उसके बाद धीरे –धीरे कई प्राईवेत स्कूलों की भी

स्थापना हुई थी। उस समय मणिपुर की शिक्षा प्रथा इस प्रकार थी – L.P School, U.P School, Middle School, और High School ।

आरम्भ में शिक्षा के प्रचार– प्रसार की भाषा या माध्यम बंगाली भाषा और बंगाली पुस्तक थी । बाद में बंगला से मणिपुरी में अनुवाद पाठ्य – पुस्तकों ने बंगाली पाठ्य – पुस्तकों का स्थान ले लिया गया। फिर धीरे – धीरे अंत में मणिपुर के अपने लोगों द्वारा खुद के लिखे गए मूल मणिपुरी पाठ्य पुस्तकों का प्रयोग किया गया। इसी नई शिक्षा नीति के चलते मणिपुरी साहित्य का विकास भी इस समय विशेष रूप से प्रगति होने लगा।

पश्चिमी शिक्षा के आने से शिक्षित नई युवा पीड़ी नई– उमंगों के साथ उभरने लगी। मणिपुर में साहित्य, कला– विद्या, नृत्य– गान का एक लम्बा और संपन्न परंपरा रहा। लेकिन २० वीं शताब्दी के आरम्भ में ये सब उथल– पुथल होने लगी और नई धरा के प्रवाह में नए परिवर्तन तथा नई खोजों के साथ प्रकट होकर सामने आई। वास्तव में यह समय मणिपुरी संकृति में पुनर्जागरण का समय हैं।

मणिपुरी भाषा और साहित्य का विकास

मणिपुरी भाषा के प्रति प्रेम और इसका विकास हेतु १० वीं शताब्दी में आरम्भ हुई आन्दोलन अति आव्यश्यक हैं। क्योंकि भाषाई आन्दोलन और साहित्यिक आन्दोलन में घनिष्ट सम्बन्ध हैं। मातृभाषा अथवा मणिपुरी भाषा प्रेम के आन्दोलन से ही मणिपुरी साहित्य की सृस्ती हुई। गौडीय वैष्णव धर्म को अपनाने के कारण धार्मिक ग्रन्थ, पूजा– पाठ, नाच– गान सभी में बंगाली भाषा के प्रयोग की यह नीति महाराज भाग्यचन्द्र के समय से चली आ रही थी। इस प्रकार मणिपुरी संस्कृति में बंगाली भाषा का लम्बे समय तक राज था। यह परंपरा राजा चुराचंद के समय तक चलता रहा। मातृभाषा प्रेमी कवि चाओबा ने 'मैतैलोन'(मणिपुरी भाषा या मैतै भाषा) नामक पुस्तक के अंतर्गत 'वाखलगी ईचेल'(विचारों का प्रवाह –१६३०) शीर्षक में लिखा हैं ''अत्यंत दुःख की बात हैं। शीतल –सुशील मणिपुरी भाषा, पहाड़ में खिलता ईङेलै (एक मणिपुरी फूल) की तरह तथा समुद्र के अंदर गहराई में स्थित मणि की तरह बिना जाने बिना देखे बेकार पड़ी हैं।" माधवी नामक पुस्तक की प्रस्तावना में डॉक्टर कमल भी लिखते हैं– "नाटक, कहानी, काव्य, पत्रिका, आदि विभिन्न प्रकार की किताबें प्रचुर मात्र में मिल रही हैं। इसी समय मणिपुरी किताब पढने के लिए न मिल पाना बहुत ही लज्जा की बात हैं।"

ऐसी स्थिति में बंगाली भाषा के बदले में मणिपुरी भाषा के प्रयोग को आगे बढ़ाने तथा विकास करने हेतु प्रयास २० वीं शताब्दी के आरम्भ में एक चुनौती के साथ आगे चल रहा था। चुराचंद महाराज मातृभाषा और साहित्य के क्षेत्र में रूचि रखते थे; यही कारण रहा होगा कि मणिपुरी भाषा उस समय विकास के रास्ते पर आगे बढ़ रहे थे। नाच – गान के क्षेत्र में मणिपुरी भाषा के प्रयोग को आगे बढाने वाले कलाकारों में राजकुमार श्रीयुवर सना का नाम अग्रगण्य हैं। उन्होंने सर्वप्रथम मणिपुरी 'रासलीला' का उद्घाटन किया था। वे कई मणिपुरी नत–गीतों का भी सृजन किया करते थे; और गाते भी थे। उनके ऐसे कामों से कई गौड़ीय वैष्णव धर्म के गुरुओं ने उसे बहिस्कृत भी किया गया। मणिपुरी गाने के प्रचार प्रसार कार्य में उनका सेवक शागोल्सेम कालिदमन ने आगे बढ़ाने का काम किया। कवी ख्वाईराकपम चाओबा ने रासगीत को मणिपुरी भाषा में अनुवाद करके अपनी बेटी के नेतृत्व में गवाने का प्रयास किया। दूसरी ओर उस्ताद थम्बौ के परिश्रम से शास्त्रीय संगीत की धारा मणिपुर में बहने लगी।

२० वीं शताब्दी के आरम्भ में मणिपुरी इतिहास, मणिपुरी भाषा और संस्कृति के बारे में पुनः खोज प्रारंभ कर दिया गया। हमें सबसे पहले खुमंथेम लक्शित्लाल कुंदो द्वारा लिखित "मणिपुर इतिहास (१८६०)" देखने को मिलता हैं। मणिपुर में ईसाई धर्म के प्रचार – प्रसार के लिए आए Reve.Pettegrew ने मणिपुरी व्याकरण प्रथम भाग (१६००) और द्वितीय भाग (१६०३), मणिपुरी तू बंगाली डिक्शनरी (१६६६) आदि भाषाई अध्ययन से सम्बंधित किताबें प्रकाशित किए गए। सन, १६१७ में पुखम्बम पारिजात का मणिपुरी इतिहास (प्रथम और द्वित्य खंड), मणिपुर पुरावृत प्रकाशित किए गए। संक्षेप में कहा जाए तो २० वीं शताब्दी के आरम्भ में विभिन्न विद्वानों ने अपने – अपने क्षमतानुसार मणिपुरी इतिहास, मानव सृजन, धर्म समाज और संस्कृति के बारे में खोज करना शुरू किया जाने लगा। उन्हें दृंढ़ विश्वास था कि मणिपुर भारत से सम्बंधित एक देश हैं।

आधुनिक मणिपुरी साहित्य के विकास के प्रथम चरण की शुरुवाद, ईसाई धर्म को प्रचार करने के लिए ईसाई धर्म से सम्बंधित किताबों का मणिपुरी भाषा में प्रकाशित करने से मानी गई है। डॉक्टर विलियम केरी के सन १८१४ में नियु टेस्टामें के कुछ भाग सेरामपुर प्रेश में छपा गया। रेवरेंड डब्लियु पितिग्रू ने भी सन १८६३ में 'कृष्णा और यीशु के बीच वाद – विवाद' नामक लेख का प्रकाशित किया गया। द्वित्य चरण में बंगाली भाषा से मणिपुरी भाषा में अनुवादिद किताबों के प्रकाशित किए जाने लगे थे। धीरे – धीरे सन १६२६ तक आने पर मूल अपनी मातृभाषा में लिखने वाले प्रमुख पांच रचनाकार देखने को मिलते हैं – १)ख्वाईराकपम चाओबा– छात्र मचा कान्नाबा वा, २) हिजम इराबोत सिंह– शैदम शैरें, ३)पुखाम्बम पारिजात – मैतै वारेंग अनौबा, मैतै साहित्य, ४) ए.कमल – शिनफम, ५) चीड़ाखम मयूरध्वज – शैरें अनौबा। सन १६२६ दिसम्बर को स्टेट दरबार के द्वारा इन पांच रचनाकारों के पाठ्य – पुस्तकों को चयन करके ख़रीदा गया। इन रचनाकारों के पुस्तकों से पता चलता हैं कि उनके लेखन कला में कल्पना शक्ति के बल पर अपने आतंरिक मूल तत्वों को प्रकट करने की क्षमता हैं। साथ ही साथ भाषा शैली में शौन्दर्यता और शब्द संरचना में चतुराई देखने को मिलते हैं।

वास्तव में देखा जाए तो आधुनिक मणिपुरी साहित्य के निर्माण में पत्रिकाओं का बहुत बड़ा योगदान था। विभिन्न पत्रिकाओं में लेखकों, कवियों तथा विशेषज्ञों के गद्य, वाद – विवाद, कविता आदि देखने को मिलते हैं। बाद में नाटक, उपन्यास आदि लम्बे – लम्बे रचनाये भी छापे गए। द्वित्य महायुद्ध से पहले प्रकाशित कुछ पत्रिकाओं के नाम हैं– मैतै चनू (१६६२ संपादक– हिजम इराबोत सिंह), जागरण (१६२४ संपादक– श्री अर्जुन सिंह), यकाईरोल (१६३० संपादक – डॉ. एल. लैरेन सिंह), ललित मंजरी पत्रिका (१६३३ संपादक– अराम्बम दरेंद्रजित सिंह), अपोक्पी (१६४४ संपादक– हिजम गुण सिंह), प्रतिदिन निकलने वाले सर्वप्रथम मणिपुरी अखबार का नाम हैं– 'दैनिक मणिपुर' (सन १६३३ संपादक – अतोमबाबू)।

इस प्रकार आधुनिक मणिपुरी साहित्यकारों ने लोगों के विचार भण्डार में नवीन चेतना तथा नवीन मानवीय मूल्यों को ठूंसकर संपूर्ण रूप से अपने पैरों में खड़ा होने की क्षमता रखकर एक नया बहुमूल्य साहित्य खड़ा कर दिया।

निष्कर्ष

मणिपुर में पुनर्जागरण का आगमन २० वीं शताब्दी में हुआ। यह पश्चिमी शिक्षा की देन हैं। पश्चिमी शिक्षा के प्रचार– प्रसार से मणिपुर के लोगों में नई चेतना, नई उत्साह, तथा नए ज्ञान का संचार होने लगा। जिससे धीरे–धीरे मणिपुरी समाज के हर क्षेत्र में एक नया परिवर्तन आ गया। पढ़े–लिखे युवा पीढ़ी के मन में अंग्रेजी शासन के अत्याचारों के प्रति विरोधी भावना तथा देश के प्रति प्रेम भावना जागृत हुई। फलस्वरूप प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से भ्रष्ट शासन के ख़िलाफ़ आवाज उठाने लगे कई आन्दोलानें करने लगे; जैसे 'प्रथम नुपीलाल' (१६०४), जादोनांग अमसुं रानी गैदिन्लीयु गी ईहौ (१६३०–१६४६), द्वितीय नुपीलान (१६३६), नेता एराबोत की राजनीति इहौ(१६३८–१६८५) आदि।

मणिपुरी साहित्यिक इतिहास में पुनर्जागरण काल का यह समय अत्यधिक महत्त्व माना जाता हैं। इसे मणिपुरी साहित्य का स्वर्णयुग कहना उपयुक्त होगा। लम्बे समय से सूखे पड़े मणिपुरी साहित्य की धरती २० वीं शताब्दी के आरम्भ में सभी दिशाओं से आए नए विचार और नई चेतना के बादलों से बरसे, बारिश बनकर, जाग उठे। पेड़– पौधों में, आने लगी नई हरियाली; हरियाली पत्तियों के साथ फलने– फूलने लगी। मणिपुरी साहित्य की धरती पर फिर से छा गयी हरियाली। इसी विषय में खुश होकर कवि कमल भी गाते हैं –

मातम कुइना गी तुंदा
लेंशिल्लाकले इमा मैतै चानू
मैतै साहित्य मंदिर नुङदा
येंदाई ठनना लैहापतुना
कत्लुसी इमागी खुयादा

हिंदी अनुवादः

बहुत समय के बाद
पधार रही हैं माता मैतै चनू
मैतै साहित्य मंदिर में
टोकरी भर फुलों को
करते हैं अर्पित माता के चरणों में

इस काल के मूल साहित्यिक रूप हैं– रोमांटिक और आदर्श; मातृभूमि और मातृभाषा के प्रति प्रेम भाव, वैयक्तिवाद; वैष्णव धर्म दर्शन; प्राचीन जगत; उच्च आदर्श चरित्र और प्रेम रूप का दर्शन; इतिहास और मिथकीय कहानियों पर आधारित रचनाओं का लिखा जाना; नए जन्मे साहित्यिक कृतियाँ जैसे– उपन्यास, नाटक, कविता, कहानी, आलोचना, खंडकाव्य, महाकाव्य आदि का लिखा जाना; छंद, भाषा– प्रयोग आदि में ध्यान देना; भारतीय और पश्चिमी साहित्य का प्रभाव; अन्य साहित्यिक कृतियों का मणिपुरी अनुवाद आदि।

सन्दर्भ

1. ''मणिपुरी साहित्य गी ममल लेप्पा'' (संपादक : स्वर्गीय हाओबम गौरदास सिंह, प्रकाशक: नहारोल साहित्य प्रेमी समिति इम्फाल, पांचवीं प्रकाशन: जनवरी, २०२०)
2. ''अनौबा मणिपुरी साहित्य गी साहित्यकार खरा: मित्यें अमा'' (लेखिका– रोयबाला हैग्रुजम, प्रकाशक: ऐच. सुशीला देवी उचेकोन युवराज पल्ली इम्फाल, प्रथम प्रकाशन: नवेम्बर २००६)
3. ''लै– परेङ'' (कवि– डॉक्टर लमाबम कमल, प्रकाशक: लाइश्रम लेनिन, सेक्रेअतारी फिक्शन एंड पोइट्री क्लब इम्फाल, प्रकाशन: अक्टूबर १३–१६१६)
4. पुनर्जागरण (विकिपीडिया)
5. ''आधुनिक हिंदी साहित्य का इतिहास'' (लेखक– डॉ. बच्चन सिंह, प्रकाशक: लोकभारती प्रकाशन, प्रयागराज–२११००१, वर्तमान संस्करण: २०२३)